



राजस्थान

सहायक अभियोजन अधिकारी (APO)

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग - 5

सामान्य हिन्दी एवं अंग्रेजी



विषयसूची

| S No. | Chapter Title | Page No. |
|-------|---|----------|
| 1 | संधि | 1 |
| 2 | उपसर्ग | 13 |
| 3 | विलोम शब्द | 17 |
| 4 | वाक्य के एक शब्द | 23 |
| 5 | पारिभाषिक शब्दावली | 31 |
| 6 | वर्तनी शुद्धि | 43 |
| 7 | वाक्य शुद्धि | 48 |
| 8 | Tense (काल) | 52 |
| 9 | Voice (वाच्य) | 59 |
| 10 | Narration (कथन) | 66 |
| 11 | Adjective (विशेषण) | 73 |
| 12 | Article (लेख) | 86 |
| 13 | Preposition (उपसर्ग) | 93 |
| 14 | Modal Verb | 107 |
| 15 | One Word Substitution (एक शब्द प्रतिस्थापन) | 114 |

1

CHAPTER

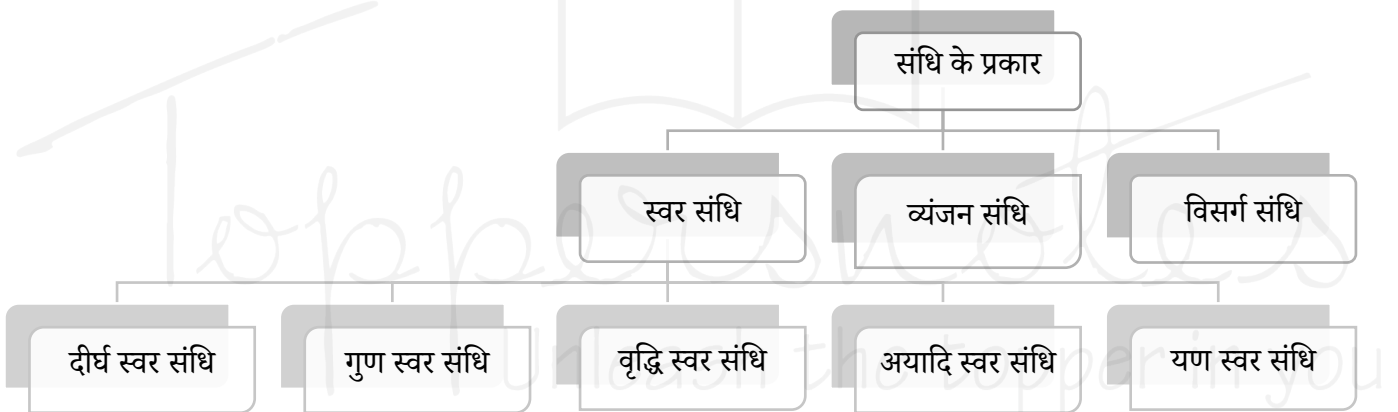
संधि



- संधि शब्द का अर्थ है - **वर्ण विकार**।
- दो वर्णों या ध्वनियों के परस्पर व्यवधान रहित संयोग से होने वाले परिवर्तन (विकार) को **संधि** कहते हैं।

उदाहरण के रूप में → विद्यालय = विद्या + आलय

- अर्थात् **विद्या** शब्द का अंतिम वर्ण में “**आ**” और **आलय** का प्रारम्भिक वर्ण “**आ**” के समीप आने पर दो दीर्घ वर्णों के स्थान पर एक “**आ**” वर्ण रूप में **एकादेश** हो जाता है।
- **श्री किशोरी दास वाजपेयी के अनुसार**, “जब दो या अधिक वर्ण पास-पास आते हैं तो कभी-कभी उनमें रूपांतर हो जाता है। इसी रूपांतर को संधि कहते हैं।”
- दूसरी तरफ, इस परिवर्तन से इन ध्वनियों या वर्णों को पुनः अपने मूल रूप में लाने की प्रक्रिया **संधि-विच्छेद** कहलाती है।
- **उदाहरण स्वरूप -**
 - ✓ **संधि** : महा + ईश = महेश [आ + ई = ए (यही परिवर्तन/विकार है)]
 - ✓ **संधि-विच्छेद**: महेश = महा + ईश (पुनः अपने मूल रूप में)



स्वर संधि

- दो **स्वरो के मेल** से उत्पन्न होने वाले विकार या परिवर्तन को **स्वर संधि** कहते हैं।

उदाहरण के लिए - भाव + अर्थ = भावार्थ

- यहाँ 'भाव' शब्द का अंतिम स्वर 'अ' एवं 'अर्थ' शब्द का पहला स्वर 'अ', दोनों स्वरो के) से 'आ' स्वर की उत्पत्ति हुई, जिससे 'भावार्थ' शब्द का निर्माण हुआ। स्वरो के ऐसे मेल को स्वर-संधि कहते हैं।

दीर्घ स्वर संधि :

- दो समान स्वर मिलकर जब दीर्घ स्वर में बदल जाते हैं तो वहाँ **दीर्घ स्वर संधि** होती है।
या
- यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ तथा 'ऋ' स्वरो के पश्चात् ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ या ऋ स्वर आएँ तो दोनों मिलकर क्रमशः आ, ई, ऊ तथा ऋ हो जाते हैं।

उदाहरण :

| स्वर | उदाहरण शब्द | संधि से बना नया शब्द |
|--------------|--|--|
| अ + अ = आ | दैत्य + अरि अन्य + अन्य मध्य+अवधि दिवस + अवसान दीप + अवली समान + अधिकार कल्प + अंत स + अवधान मार्त + अण्ड दिन + अन्त सुख + अन्त अन्न + अभाव सह + अनुभूति पर + अधीन उत्तर + अयन अधिक + अंश पाठ + अंतर | दैत्यारी अन्यान्य मध्यावधि दिवसावसान दीपावली समानाधिकार कल्पान्त सावधान मार्तण्ड दिनान्त सुखान्त अन्नाभाव सहानुभूति पराधीन उत्तरायण अधिकांश पाठान्तर |
| अ + आ = आ | देव + आनन्द पुस्तक + आलय भोजन + आलय देव + आलय न्याय + आलय पत्र + आलय मरण + आसन्न हिम + आलय शिव + आलय | देवानन्द पुस्तकालय भोजनालय देवालय न्यायालय पत्रालय मरणासन्न हिमालय शिवालय |
| आ + अ = आ | विद्या + अर्थी तथा+अपि महा + अर्णव परीक्षा + अर्थी यथा + अर्थ विद्या + अभ्यास आज्ञा + अनुसार तथा + अस्तु | विद्यार्थी तथापि महार्णव परीक्षार्थी यथार्थ विद्याभ्यास आज्ञानुसार तथास्तु |

| | | |
|--------------|---|--|
| आ + आ = आ | विद्या + आलय श्रद्धा + आनंद | विद्यालय श्रद्धानंद |
| इ + इ = ई | कवि + इन्द्र रवि + इंद्र अभि + इष्ट अति + इव | कवीन्द्र रवीन्द्र अभीष्ट अतीव |
| ई + इ = ई | मही + इन्द्र शची + इंद्र फणी+ इन्द्र सुधी + इन्द्र देवी + इच्छा | महीन्द्र शचींद्र फणीन्द्र सुधीन्द्र देवीच्छा |
| इ + ई = ई | गिरि + ईश कपि + ईश परि + ईक्षा हरि + ईश मही + ईश | गिरीश कपीश परीक्षा हरीश महीश |
| ई + ई = ई | रजनी + ईश पृथ्वी + ईश फणी + ईश्वर नारी + ईश्वर | रजनीश पृथ्वीश फणीश्वर नारीश्वर |
| उ + उ = ऊ | भानु + उदय गुरु + उपदेश सु + उक्ति | भानूदय गुरूपदेश सूक्ति |
| उ + ऊ = ऊ | वसु + उत्सव अम्बु + ऊर्मि धातु + ऊष्मा | वसूत्सव अंबूर्मि धातूष्मा |
| ऊ + ऊ = ऊ | भू + ऊर्जा वधू + ऊर्मि भू + ऊर्ध्व | भूर्जा वधूर्मि भूर्ध्व |
| ऋ + ऋ = ऋ | पितृ + ऋण | पितृण |

गुण संधि :

- इस संधि के तहत यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' की ध्वनि आती है तो वह 'ए' में बदल जाती है, 'उ' या 'ऊ' की ध्वनि आती है तो वह 'ओ' में बदल जाती है तथा 'ऋ' की ध्वनि आती है तो वह 'अर्' में बदल जाती है।
- अ, ए एवं ओ वर्णों को 'गुण' वर्ण कहा जाता है।

उदाहरण :

| स्वर | शब्द | नया शब्द (संधि) |
|-----------|----------------|-----------------|
| अ + इ = ए | देव + इन्द्र | देवेन्द्र |
| अ + ई = ए | प्र + इषिति | प्रेषिति |
| आ + इ = ए | प्र + इत | प्रेत |
| आ + ई = ए | शुभ + इच्छा | शुभेच्छा |
| | राम + इन्द्र | रमेन्द्र |
| | गण + ईश | गणेश |
| | खग + ईश | खगेश |
| | यथा + इष्ट | यथेष्ट |
| | राजा + इन्द्र | राजेन्द्र |
| | रमा + ईश | रमेश |
| | नर + इन्द्र | नरेन्द्र |
| | सुर + इंद्र | सुरेन्द्र |
| | उप + इन्द्र | उपेन्द्र |
| | जित + इन्द्रिय | जितेन्द्रिय |
| | परम + ईश्वर | परमेश्वर |
| | महा + ईश्वर | महेश्वर |
| | देव + ईश | देवेश |
| | महा + इन्द्र | महेन्द्र |
| | नर + ईश | नरेश |
| | नाग + ईश | नागेश |
| | भुवन + ईश्वर | भुवनेश्वर |
| | सुर + ईश | सुरेश |
| | भारत + इंद्र | भारतेन्द्र |
| | हृषीक + ईश | हृषीकेश |
| अ + उ = ओ | वीर + उद्धत | वीरोद्धत |
| | प्र + उत्साहन | प्रोत्साहन |
| | पुष्प + उद्यान | पुष्पोद्यान |
| | प्राप्त + उदक | प्राप्तोदक |
| | वन + उत्सव | वनोत्सव |
| | हिम + उपल | हिमोपल |
| | पूर्ण + उपमा | पूर्णोपमा |
| | सर्व + उदय | सर्वोदय |
| | सांग + उपांग | सांगोपांग |
| | दीप + उत्सव | दीपोत्सव |
| | सूर्य + उदय | सूर्योदय |
| | सर्व + उत्तम | सर्वोत्तम |
| | कर्ण + उद्धार | कर्णोद्धार |
| | चन्द्र + उदय | चन्द्रोदय |
| | पर + उपकार | परोपकार |

| | | |
|-------------|---|---|
| अ + ऊ = ओ | जल + ऊर्मि प्र + ऊढ़ नव + ऊढ़ा अक्ष + ऊहिनी | जलोर्मि प्रौढ़ नवोढ़ा अक्षौहिणी |
| आ + उ = ओ | महा + उत्सव महा + उदधि यथा + उचित महा + उदय महा + उर्मि | महोत्सव महोदधि यथोचित महोदय महोर्मि |
| आ + ऊ = ओ | गंगा + ऊर्मि यमुना + ऊर्मि | गंगोर्मि यमुनोर्मि |
| अ + ऋ = अर् | कपट + ऋषि अधम + ऋण देव + ऋषि राज + ऋषि सप्त + ऋषि | कपटर्षि अधर्मण देवर्षि राजर्षि सप्तर्षि |
| आ + ऋ = अर् | महा + ऋषि | महर्षि |

वृद्धि संधि :

- इस संधि के तहत यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' की ध्वनि आती है तो वह 'ऐ' में और यदि 'ओ' या 'औ' की ध्वनि आती है तो वह 'औ' में बदल जाती है।
- आ, ऐ एवं औ वर्णों को 'वृद्धि' वर्ण कहते हैं।

उदाहरण :

| संधि | शब्द | नया शब्द (संधि फल) |
|-----------|---|--|
| अ + ए = ऐ | एक + एक जीव + एषणा | एकैक जीवैषणा |
| अ + ऐ = ऐ | परम + ऐश्वर्य भाव + ऐक्य मत + ऐक्य तत्र + एव विश्व + ऐक्य | परमैश्वर्य भावैक्य मतैक्य तत्रैव विश्वैक्य |
| आ + ए = ऐ | सदा + एव तथा + एव | सदैव तथैव |
| आ + ऐ = ऐ | महा + ऐश्वर्य विद्या + ऐश्वर्य | महैश्वर्य विद्यैश्वर्य |

| | | |
|--------------|---------------------------------|----------------------|
| अ + ओ = औ | परम + ओज | परमौज |
| आ + ओ = औ | महा + ओजस्वी महा + औदार्य | महौजस्वी महौदार्य |
| अ + औ = औ | वन + औषधि | वनौषधि |
| आ + औ = औ | महा + औषध | महौषध |

यण् संधि :

- इस संधि के अंतर्गत यदि 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ'
तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आता है तो वे
निम्नानुसार परिवर्तित हो जाते हैं -
✓ इ / ई → य्,
✓ उ / ऊ → व्,
✓ ऋ → र्।
- साथ ही बाद वाले शब्द के पहले स्वर की मात्रा य्, व्, र्
में लग जाती है।
- वि + अव + हार = व्यवहार (इसमें 'अव' मूल शब्द
'वि' उपसर्ग तथा 'हार' प्रत्यय है।)

उदाहरण :

| संधि का नियम | संधि-विच्छेद (मूल शब्द) | नया शब्द (संधि- फल) |
|-----------------|---|---|
| इ + अ = 'य्' | अति + अधिक यदि + अपि प्रति + अय प्रति + अंग गति + अवरोध अभि + अर्थी वि + अभिचार रीति + अनुसार इति + अर्थ वि + अर्थ अति + अल्प अनु + अय | अत्यधिक यद्यपि प्रत्यय प्रत्यंग गत्यवरोध अभ्यर्थी व्यभिचार रीत्यनुसार इत्यर्थ व्यर्थ अत्यल्प अन्वय |

| | | |
|-----------------|---|--|
| इ + आ = य | इति + आदि वि + आकुल अति + आवश्यक प्रति + आरोपण वि + आयाम अति + आचार | इत्यादि व्याकुल अत्यावश्यक प्रत्यारोपण व्यायाम अत्याचार |
| ई + अ = 'य्' | नदी + अर्पण देवी + अर्पण देवी + अर्थ | नद्यर्पण देव्यर्पण देव्यर्थ |
| ई + आ = य | नदी + आगम देवी + आगम सरस्वती + आराधन | नद्यागम देव्यागम सरस्वत्याराधन |
| इ + उ = यु | अति + उत्तम प्रति + उपकार प्रति + उत्तर अति + उक्ति अति + उत्तम अभि + उदय उपरि + उक्त | अत्युत्तम प्रत्युपकार प्रत्युत्तर अत्युक्ति अत्युत्तम अभ्युदय उपर्युक्त' |
| ई + उ = यु | सखी + उचित स्त्री + उपयोगी | सख्युचित स्त्र्युपयोगी |
| इ + ऊ = यू | अति + ऊष्म नि + ऊन | अत्यूष्म न्यून |
| ई + ऊ = यू | नदी + ऊर्मि | नद्यूर्मि |
| इ + ए = ये | प्रति + एक देवी + एकता | प्रत्येक देव्येकता |
| इ + ऐ = यै | देवी + ऐश्वर्य | देव्यैश्वर्य |
| इ + ओ = यो | दधि + ओदन | दध्योदन |
| उ + अ = व् | सु + अच्छ सु + अल्प मधु + अरि | स्वच्छ स्वल्प मध्वरि |
| उ + आ = वा | सु + आगत गुरु + आश्रम | स्वागत गुर्वाश्रम |
| ऊ + आ = वा | भू + आदि वधू + आगमन | भ्वादि वध्वागमन |
| उ + ए = वे | अनु + एषण | अन्वेषण |

| | | |
|---------------|---|---|
| उ + इ = वि | अनु + इति धातु + इक | अन्विति धात्विक |
| ऊ + इ = वि | वधू + इच्छा | वध्विच्छा |
| ऋ + अ = र् | पितृ + अनुमति | पित्रनुमति |
| ऋ + आ = र | पितृ + आज्ञा मातृ + आज्ञा मातृ + आनन्द पितृ + आदेश | पित्राज्ञा मात्राज्ञा मात्रानन्द पित्रादेश |
| ऋ + इ = रि | मातृ + इच्छा | मात्रिच्छा |
| ऋ + उ = रु | भ्रातृ + उपकार | भ्रात्रुपकार |

अयादि संधि :

- यदि 'ए' या 'ऐ' और 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आता है तो निम्न रूप से विकार देखने को मिलता है।
 - ✓ ए → अय् में,
 - ✓ ऐ → आय् में,
 - ✓ ओ → अव्
 - ✓ औ → आव्

उदाहरण :

| संधि का नियम | संधि-विच्छेद (मूल शब्द) | नया शब्द (संधि-फल) |
|----------------|-----------------------------------|--------------------------|
| ए + अ = अय | ने + अन शे + अन चे + अन | नयन शयन चयन |
| ऐ + अ = आय | नै + अक गै + अक गै + अन | नायक गायक गायन |
| ओ + अ = अव | पो + अन | पवन |
| ओ + इ = अवि | पो + इत्र | पवित्र |
| औ + अ = आव | पौ + अक श्रौ + अन श्रौ + अक | पावक श्रावण श्रावक |
| औ + ई = आवि | नौ + इक | नाविक |
| औ + उ = आवु | भौ + उक | भावुक |

व्यंजन संधि

- किसी व्यंजन का किसी अन्य व्यंजन या स्वर के साथ मेल होने पर ध्वनियों में उत्पन्न होने वाले विकार को ही व्यंजन संधि कहते हैं।
- व्यंजन संधि का अन्य नाम (संस्कृत में) - हल् संधि

| व्यंजन संधि के कुछ नियम | | | |
|---|---|--|--|
| संधि का नियम | नियम | संधि-विच्छेद | संधि-फल |
| 1. यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात् 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के बाद किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण आए या य, र, ल, व या कोई स्वर आए तो 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण अर्थात् 'ग', 'ज', 'ड', 'द', 'ब', हो जाता है। | क् → ग्, च् → ज्, ट् → ड्, त् → द्, प् → ब् | वाक् + ईश वाक् + ईश्वर दिक् + गज दिक् + दर्शन दिक् + अंबर वाक् + दान सत् + वाणी अच् + अंत अप् + इंधन तत् + रूप जगत् + आनंद | वागीश वागीश्वर दिग्गज दिग्दर्शन दिग्ंबर वाग्दान सद्वाणी अजंत अभिंधन तद्रूप जगदानंद |

| | | | |
|---|---|--|--|
| | | सत् + भावना षट् + आनन सत् + गति उत् + ज्वल तत् + अनन्तर उत् + गम उत् + योग जगत् + ईश षट्+रिपु कृत् + अंत जगत् + अंबा सत् + धर्म सुप् + अन्त उत् + विग्न सत् + आनन्द अप् + धि दिक् + अन्त तत् + अनुकूल | सद्भावना षडानन सद्गति उज्ज्वल तदनन्तर उद्गम उद्योग जगदीश षड्रिपु कृदन्त जगदम्बा सद्धर्म सुबंत उद्विग्न सदानन्द अब्धि दिगन्त तदनुकूल |
| 2. यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात् 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' के बाद 'न' या 'म' आए तो 'क्' 'च्' 'ट्' 'त्' 'प्' अपने वर्ग के पंचम वर्ण अर्थात् ङ, ज, ण, न, म् में बदल जाते हैं। | क्→ङ्, च्→ञ्, ट्→ण्, त्→न्, प्→म् | वाक् + मय षट् + मास जगत् + नाथ अप् + मय तत् + मय सत् + मार्ग उत् + नति उत् + नयन दिक् + नाग षट् + मुख सत् + निवेश दिक् + मण्डल विद्धत् + मूर्ति | वाङ्मय षण्मास जगन्नाथ अम्मय तन्मय सन्मार्ग उन्नति उन्नयन दिङ्नाग षण्मुख सन्निवेश दिङ्मण्डल विद्धन्मूर्ति |
| 3. यदि 'म्' के बाद कोई स्पर्श व्यंजन आए तो 'म' जुड़ने वाले वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण या अनुस्वार हो जाता है। (अपवाद- सम् + कृत = संस्कृत सम् + कृति = संस्कृति) | म् → अनुस्वार/पंचम | अहम् + कार किम् + चित् सम् + गम सम् + तोष सम् + चय सम् + मान किम् + कर किम् + नर | अहंकार किंचित् संगम संतोष संचय सम्मान किंकर किन्नर |

| | | | |
|---|----------------------|--|---|
| | | सम् + कल्प सम् + पूर्ण पम् + चम अकिम् + चन दिवम् + गत परम् + तु सम् + तप्त सम् + मति अवश्यम् + भावी सम् + शय सम् + विधान | संकल्प संपूर्ण पंचम अकिञ्चन दिवङ्गत परन्तु संतप्त सम्मति अवश्यम्भावी संशय संविधान |
| 4. यदि म् के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह में से किसी भी वर्ण का मेल हो तो 'म' के स्थान पर अनुस्वार ही लगेगा। | म् → (अनुस्वार) | सम् + योग सम् + रचना सम् + वाद सम् + सार सम् + रक्षण सम् + हार | संयोग संरचना संवाद संसार संरक्षण संहार |
| 5. यदि त् या द् के बाद 'ल', 'ट', 'ड' रहे तो 'त्' या 'द्' क्रमशः 'ल्', 'ट्', 'ड्' में बदल जाता है। | त्/द् + ल → ल् | उत् + लास उद् + लेख तत् + लीन उद् + लाघ उत् + लंघन तडित् + लेखा तत् + टीका | उल्लास उल्लेख तल्लीन उल्लाघ उल्लंघन तडिल्लेखा तट्टीका |
| 6. यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'ज' / 'झ' या 'म' हो तो 'त्' या 'द्' क्रमशः 'ज्' या 'न्', में बदल जाता है। | त्/द् → ज् | सत् + जन उद् + झटिका विपत् + जाल जगत् + जीवन शरद् + माला उपनिषद् + मीमांसा जगत् + जननी | सज्जन उज्झटिका विपज्जाल जगज्जीवन शरन्माला उपनिषन्मीमांसा जगज्जननी |
| 7. यदि 'त्' या 'द्' वर्ण के बाद 'श' वर्ण आता है, तो 'त्' या 'द्' का परिवर्तन 'च्' में हो जाता है और 'श' का परिवर्तन 'छ' में हो जाता है। | त्/द् → च् श → छ् | उद् + श्वास उद् + शिष्ट सत् + शास्त्र मृद् + शकटिक विद्युत् + शक्ति तत् + शंकर | उच्छ्वास उच्छिष्ट सच्छास्त्र मृच्छकटिक विद्युच्छक्ति तच्छंकर |

| | | | |
|--|---------------------|---|--|
| 8. यदि 'त्' या 'द्' के बाद 'च' या 'छ' हो तो 'त्' या 'द्' का 'च्' हो जाता है। | त्/द् → च् | उत् + चारण सत् + चरित्र वृहत् + चयन उत् + छिन्न सत् + चित सत् + चित् + आनन्द | उच्चारण सच्चरित्र वृहच्चयन उच्छिन्न सच्चित सच्चिदानन्द (नियम=1+8) |
| 9. 'त्' या 'द्' के बाद यदि 'ह' हो तो 'त्' एवं 'द्' के स्थान पर 'दू' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जाता है। | त्/द् → दू ह → ध | तत् + हित उत् + हार पद् + हति | तद्धित उद्धार पद्धति |
| 10. जब पहले पद के अंत में स्वर हो और आगे के पद का पहला वर्ण 'छ' हो तो 'छ' के स्थान पर 'च्छ' हो जाता है। | छ → च्छ | अनु + छेद परि + छेद आ + छादन संधि + छेद स्व + छंद वृक्ष + छाया श्री + छाया प्र + छन्न लक्ष्मी + छाया मातृ + छाया | अनुच्छेद परिच्छेद आच्छादन संधिच्छेद स्वच्छंद वृक्षच्छाया श्रीच्छाया प्रच्छन्न लक्ष्मीच्छाया मातृच्छाया |
| 11. यदि किसी शब्द के अंत में 'अ' या 'आ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर आए एवं दूसरे शब्द के आरंभ में 'स' हो तो 'स' के स्थान पर 'ष' हो जाता है। | स → ष | अभि + सेक वि + सम नि + सिद्ध सु + सुप्ति वि + साद सु + स्मिता | अभिषेक विषम निषिद्ध सुषुप्ति विषाद सुष्मिता |
| 12. ऋ, र, ष के बाद जब कोई स्वर, कोई 'क' वर्गीय या 'प' वर्गीय वर्ण, अनुस्वार अथवा य, व, ह में से कोई वर्ण आए तो अंत में आने वाला 'न', 'ण' हो जाता है। | न → ण | भर् + अन भूष् + अन राम + अयन प्र + मान | भरण भूषण रामायण प्रमाण |
| 13. यदि 'अहन्' शब्द के बाद 'र' आए तो 'अहन्' का 'अहो' हो जाता है | अहन् + र = अहो | अहन् + रात्रि अहन् + रूप | अहोरात्र अहोरूप |
| 14. यदि 'द्' के बाद 'क-ख', 'त-थ', 'प-फ', 'श-ष' आए तो 'द्' अपने ही वर्ग के प्रथम व्यंजन 'त्' में बदल जाता है | द् → त् | तद् + पर सद् + कार उद् + साह | तत्पर सत्कार उत्साह |

| | | | |
|--|-------------|-------------------------|---------------------|
| 15. 'इ/उ' के बाद 'स्त', 'स्थ', 'स्न' आए तो उनका क्रमशः 'ष्ट', 'ष्ठ', 'ष्ण' हो जाता है | स → ष | नै + स्थिक नि + सन्न | नैष्ठिक निष्पन्न |
| 16. यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' आए तो 'न' 'ण' में बदल जाता है | न → ण | परि + नय परि + नाम | परिणय परिणाम |
| 17. यदि प्रथम वर्ण + घोष वर्ण (पंचम वर्ण को छोड़कर) आये तो प्रथम वर्ण अपने वर्ग के तृतीय वर्ण में रूपांतरित हो जाएगा | | ऋक् + वेद' | ऋग्वेद |
| | त् + आ = द् | सत् + आनन्द | सदानन्द |
| 18. व्यंजन संधि में यदि त् \ + ट आये तो त् का ट्, त् \ + ड आये तो त् का ड् तथा त् \ + ल् आये तो त् का ल् हो जाएगा। | | उत् + डयन | उड्डयन |

विसर्ग संधि

- जब विसर्ग (:) के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होता है तो इससे शब्द में विकार या परिवर्तन हो जाता है जिसे 'विसर्ग संधि' कहते हैं।

| विसर्ग संधि के नियम | | | |
|--|---------------------------------------|---|--|
| संधि का नियम | नियम | संधि-विच्छेद | संधि-फल |
| 1. यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में 'अ' हो तो दोनों का विकार 'ओ' हो जाता है। | अः + अ = ओ | मनः + अनुकूल यशः + अभिलाषा अन्यः + अन्य मनः + अनुसार | मनोनुकूल यशोभिलाषा अन्योन्य मनोनुसार |
| 2. यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद वाले शब्द का पहला अक्षर 'अ' हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। | अः + अ = अ (विसर्ग लोप) | अतः + एव यशः + इच्छा | अतएव यशइच्छा |
| 3. यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और बाद में किसी वर्ग का तृतीय/चतुर्थ वर्ण अथवा म, य, र, ल, व, ह आए तो विसर्ग 'ओ' में बदल जाता है। | अः + (ग, घ, द, ध, य, र, ल, व ...) = ओ | मनः + हर तपः + वन तमः + गुण पयः + द सरः + वर वयः + वृद्ध वयोः + वेग तेजः + बल यशः + धरा मनः + रथ | मनोहर तपोवन तमोगुण पयोद सरोवर वयोवृद्ध वयोवेग तेजोबल यशोधरा मनोरथ |

| | | | |
|---|--------------------|---|--|
| | | मनः + रंजन यशः + दा मनः+ दशा रजः + दर्शन यशः + वर्मन नभः + मण्डल अन्ततः + गत्वा सरः + ज यशः + भूमि शिरः + भाग तपः + भूमि मनः + विकार शिरः + रेखा तिरः + धान रजः + भव | मनोरंजन यशोदा मनोदशा रजोदर्शन यशोवर्मन नभोमण्डल अंततोगत्वा सरोज यशोभूमि शिरोभाग तपोभूमि मनोविकार शिरोरेखा तिरोधान रजोभव |
| 4. यदि विसर्ग के बाद अ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर अथवा किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या 'य' 'ल' 'व' 'ह' हो तो विसर्ग के स्थान पर 'र्' हो जाता है। | विसर्ग → र् | अंतः + ध्यान दुः + उपयोग आयुः + वेद ज्योतिः + मय चतुः + दिशि पुनः + जन्म निः + आहार निः + जल निः + धन दुः + आत्मा निः + लोभ आशीः + वाद आशीः + वचन दुः + गुण दुः + गंध दुः + ऊह निः + आशा दुः + दशा निः + भय निः + उपाय निः + गुण निः + मल पुनः + उक्ति बहिः + एकता | अंतर्धान दुरुपयोग आयुर्वेद ज्योतिर्मय चतुर्दिश पुनर्जन्म निराहार निर्जल निर्धन दुरात्मा निलोभ आशीर्वाद आशीर्वचन दुर्गुण दुर्गंध दुरूह निराशा दुर्दशा निर्भय निरुपाय निर्गुण निर्मल पुनरुक्ति बहिरेकता |

| | | | |
|---|--------------------|---|---|
| 5. यदि विसर्ग के बाद 'च'/'छ' या तालव्य 'श' हो तो विसर्ग 'श्' में बदल जाता है। | विसर्ग → श् | पुनः + च तपः + चर्या यशः + शरीर मनः + चिकित्सा निः + चय निः + छल निः + चल हरिः + चन्द्र | पुनश्च तपश्चर्या यशश्शरीर मनश्चिकित्सा निश्चय निश्छल निश्चल हरिश्चंद्र |
| 6. यदि विसर्ग के पहले 'अ' या 'आ' हो और बाद में 'त' या दंत्य 'स' हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है। | विसर्ग → स् | परः + पर नमः + ते मनः + ताप दुः + तर चन्द्रः + तम | परस्पर नमस्ते मनस्ताप दुस्तर चन्द्रस्तम |
| 7. यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' स्वर हो और बाद में 'क/ख/प/फ' वर्ण हो तो विसर्ग मूर्धन्य 'ष्' में बदल जाता है। | विसर्ग → ष् | आविः + कार परिः + कृत चतुः + पाद निः + कपट दुः + प्रकृति दुः + कर्म दुः + कर दुः + परिणाम निः + प्राण निः + फल निः + काम निः + पाप | आविष्कार परिष्कृत चतुष्पाद निष्कपट दुष्प्रकृति दुष्कर्म दुष्कर दुष्परिणाम निष्प्राण निष्फल निष्काम निष्पाप |
| 8. यदि विसर्ग के पहले 'अ' या 'आ' हो और बाद में 'क/ख' अथवा 'प/फ' हो तो विसर्ग 'स्' में बदल जाता है | विसर्ग → स् | पुरः + कार नमः + कार श्रेयः + कर तिरः + कार भाः + कर | पुरस्कार नमस्कार श्रेयस्कर तिरस्कार भास्कर |
| 9. यदि विसर्ग के पहले 'इ' या 'उ' स्वर हो और बाद में 'र्' हो तो विसर्ग से पहले के 'इ' या 'उ' स्वर क्रमशः 'ई' या 'ऊ' में बदल जाते हैं | दीर्घीकरण | निः + रव निः + रस निः + रोग निः + रज | नीरव नीरस नीरोग नीरज |

| | | | |
|---|---------------|---|---|
| 10. विसर्ग + ट/ठ = विसर्ग का 'ष्' में परिवर्तन | विसर्ग → ष् | धनुः + टंकार | धनुष्टंकार |
| 11. विसर्ग + त/थ = विसर्ग का 'स्' में परिवर्तन | विसर्ग → स् | निः+ तार निः + तेज इतः + ततः | निस्तार निस्तेज इतस्ततः |
| 12. विसर्ग + श/स = विसर्ग का क्रमशः 'श'/'स्' में परिवर्तन | विसर्ग → श/स् | निः + सन्देह दुः + शासन दुः + साहस | निस्सन्देह दुश्शासन दुस्साहस |
| 13. यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और बाद में 'क/ख' या 'प/फ' हो तो विसर्ग सुरक्षित रहता है | विसर्ग → : | मनः + कामना अन्तः + करण प्रातः + काल पुनः + प्राप्ति | मनःकामना अन्तःकरण प्रातःकाल पुनःप्राप्ति |



ToppersNotes
Unleash the topper in you

2

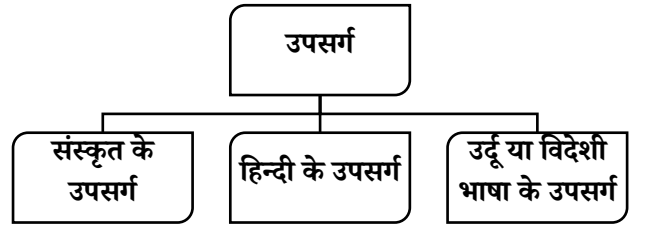
CHAPTER

उपसर्ग



- **उपसर्ग** दो शब्दों के योग से निर्मित हुआ है जिसमें 'उप' का तात्पर्य 'समीप', 'निकट' या 'पास में' से होता है तथा 'सर्ग' का अर्थ है - **सृष्टि करना**।
- वे **शब्दांश** जो किसी मूल शब्द के पूर्व या पहले जुड़कर नए शब्द का निर्माण करते हैं अर्थात् नए अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें **उपसर्ग** कहते हैं।
- इन्हें **आदि प्रत्यय** की भी संज्ञा दी जाती है क्योंकि ये शब्द के **आदि/प्रारंभ** में जुड़कर उसके अर्थ या भाव में परिवर्तन करते हैं या उसमें नई **विशेषता** उत्पन्न करते हैं।

- ये स्वतंत्र शब्द के रूप में प्रयुक्त नहीं होते, बल्कि किसी शब्द में संयुक्त होकर ही नये शब्द का निर्माण करते हैं।
उदाहरण के लिए – 'हार' शब्द के पहले 'प्र' उपसर्ग लगाने से उसका सम्पूर्ण अर्थ परिवर्तन हो जाता है।



संस्कृत के उपसर्ग

| उपसर्ग | अर्थ | उदाहरण | उपसर्ग | अर्थ | उदाहरण |
|--------|------------------|---|-------------|------------------|---|
| अति | ऊपर / अधिक / परे | अतिप्रिय, अतिरिक्त, अत्यधिक, अत्युच्च, अत्याचार, अत्यंत | उद् | उच्चता / श्रेष्ठ | उदार, उत्सर्ग, उत्तम, उत्साह, उत्थान, |
| अधि | अंतर्गत / प्रधान | अधिकार, अधिशेष, अधिकारी, अधिष्ठाता, अध्यक्ष, अधिवर्ष, अधिपति, अध्यात्म, अध्यवसाय, अधीर | उप | समीपता / सहायता | उपहार, उपवास, उपदेश, उपकार, उपवन, उपकरण |
| अनु | सादृश्य / पीछे | अनुकरण, अनुसंधान, अनुयायी, अनुशासन, अनुचर, अनुवाद, अनुशील, अनुराग, अनुशीलन, अन्वित, अन्वेषक | दुर् / दुस् | निंदा / कठिनाई | दुर्गुण, दुस्साहस, दुष्कर्म, दुर्दशा, दुर्वस्था, दुर्भाव, दुरात्मा, दुराचार, |
| अप | निरादर / दीनता | अपमान, अपयश, अपव्यय, अपकार, अपवाद, अपभ्रंश, | नि | निषेध / अधिकता | निवारण, निषेध, निलय, निवेदन, निदान, निकुंज, निवृत्त, नियम, निवारण, निकाय, निदर्शन, नितांत, निकम्मा, निकृष्ट, निरोग, निगम, निमज्जित, |
| अपि | निश्चय / भी | अपितु, अपिधान, अपिहित | निर् / निस् | रहित / बिना | निर्बल, निरपराध, निष्काम, निराकार, निस्तेज, निस्तार, निस्संकोच, निरोध, निष्पाप, निस्तेज, निष्कलंक, निश्चय, |

| | | | | | |
|-----|-----------------|--|-------|----------------------------|--|
| अभि | पास / सामने | अभिमान, अभिवादन, अभिषेक, अभिराम, अभ्यास, अभीष्ट, अभ्युदय, अभियोग, अभ्यागत | प्र | अधिक / आगे | प्रहार, प्रबल, प्रयोग, प्रेरणा, प्रकृति, प्रख्यात, प्रकाश, प्रज्ञ, प्रस्थान, |
| अव | अनादर / हीनता | अवगुण, अवहेलना, अवनति, अवमानना, अवतरण, अवलोकन, अवधि, अवधी, औगुन, अवज्ञा | प्रति | समानता / प्रत्येक / विपरीत | प्रतिवर्ष, प्रतिवाद, प्रतिध्वनि, प्रत्यर्पण, प्रतीक्षा, प्रतिकूल, प्रतिवाद, प्रतिघात, प्रताप, प्रतिपक्ष, प्रत्युत्पन्नमति, प्रत्युपकार, प्रत्यूष, प्रत्यागमन, प्रत्यक्ष, प्रत्याहार, प्रत्यंग, |
| आ | पूर्ण / सीमा | आदेश, आहार, आगमन, आजानु, आचरण, आभरण, आजन्म, आजीवन, आरक्षण, आखण्डल, आख्यायिका, आकर्षक, | परा | विपरीत / पीछे | पराजय, पराधीन, पराकाष्ठा, पराया, परार्थ, |
| सम् | पूर्णता / सुंदर | संयोग, सम्मान, संसार, समालोचना, सम्पूर्ण, समुज्ज्वल, संयोग, संस्कार, संचय, संगम, संहार, संतोष, संस्कृत, संसार, सम्मति, सम्मुख, संग्राम, संदिग्ध, संकल्प, | परि | चारों ओर | परिवर्तन, परिक्रमा, पर्यावरण, पर्याप्त, परिजन, परिशीलन, परिच्छेद, |
| वि | विशेष / अभाव | विदेश, विहीन, विभाग, विराम, विज्ञान, विकास, विराग, विमुख, वियोग, | स्व | अपना / निजी | स्वतंत्र, स्वदेश, स्वार्थ |

हिन्दी के उपसर्ग :

| उपसर्ग | अर्थ | उदाहरण |
|--------|-------------|---|
| अ | नहीं | अकाज, अचेत, अटल, अनीति, अग्राह्य, अलौकिक, अत्यंत, अखंड, अनुज, अवैतनिक, अथक, अप्रत्याशित, अभाव, अथाह, |
| उ | ऊँचा | उछालना, उतारना, उजड़ना |
| औ | बुरा / नीचे | औगुण, औघट, औसर |
| अन | बिना | अनपढ़, अनदेखा, अनमोल |
| अध | आधा | अधमरा, अधखिला, अधपका, अधजला, अधसेरा, |
| अधः | नीचे | अधोगति, अधोमुख, अधोगत |
| उन | एक कम | उनसठ, उनचास, उन्नासी, उन्नीस |
| क / कु | बुरा / कठिन | कपूत, कुढंग, कुचाल, कुपात्र, कुचैला, कुटेव, कुकर्म, कुचाल, कुरूप, |
| नि | विपरीत | निडर, निशान, निपट, |
| स / सु | अच्छा | सपूत, सजल, सजीव, सुयश, सुकान्त, सुशांत, सुडौल, सुपुत्र, सुराज, सुफल, सुकुमार, सुजन, स्वलय, सुक्ति, सौजन्य, सुषुप्ति, स्वल्प, सौष्ठव, सदय, सकाम, सावकाश, सजीव, सहर्ष, सपरिवार, सजातीय, सकर्मक, |

| | | |
|-----|----------------|---|
| भर | भरा हुआ / पूरा | भरपूर, भरसक, भरमार, भरपेट, |
| चौ | चार | चौमासा, चौराहा, चौखट |
| ति | तीन | तिरंगा, तिपाही, तिमाही |
| दु | दो | दुनाली, दुर्गा, दुमुँहा, दुलारा, दुकाल, दुधारू, |
| पर | दूसरा | परहित, परसुख, परकाज |
| बिन | निषेध / अभाव | बिनदेखा, बिनखाया, बिनव्याहा |
| चिर | सदैव | चिरकाल, चिरजीवी, चिरपरिचित |
| बहु | ज्यादा / अधिक | बहुमूल्य, बहुमत, बहुवचन |
| सह | साथ | सहचर, सहगामी, सहयोग, सहकारी |
| स्व | अपना | स्वदेश, स्वराज, स्वभाव, स्वावलंबी, स्वतंत्र, स्वचालित |

विदेशी (उर्दू) भाषा के उपसर्ग:

| उपसर्ग | अर्थ | उदहारण | उपसर्ग | अर्थ | उदहारण |
|--------|--|--|--------|--------------|---|
| अल | निश्चित | अलविदा, अलबेला, अलमस्त, अलबत्ता | हम | साथ | हमदम, हमसफर, हमराह, हमदर्दी, हमउम्र, |
| ना | रहित | नालायक, नापसंद, नापाक | बिला | बिना | बिलावजह, बिलाशक, बिलाकसूर |
| ऐन | ठीक | ऐनवक्त, ऐनइनायत, ऐनमौका | बे | अभाव | बेचारा, बेहद, बेचैन, बाइज्जत, बाकायदा, |
| ला | बिना | लाचार, लाजवाब, लापता, लावारिस, लापरवाह, लाइलाज | दर | में | दरअसल, दरकार, दरवेश |
| बद | रहित/बुरा | बदनाम, बदजात, बदतमीज, बदमाश | हर | प्रत्येक | हरघड़ी, हरवर्ष, हररोज |
| बा | अनुसार/साथ | बाकायदा, बाअदब, बाइज्जत, बामुलाहजा, बातजुर्बा, | ब | साथ/पर | बदस्तूर, बतौर, बशर्त, बनाम, बखैर, बदस्तूर |
| गैर | रहित/भिन्न | गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरमुल्क | सर | मुख्य/प्रधान | सरकार, सरदार, सरताज |
| खुश | अच्छा | खुशमिजाज, खुशकिस्मत, खुशखबरी, खुशबू | नेक | भला | नेकदिल, नेकनीयत, नेकनाम |
| कम | थोड़ा | कमजोर, कमसिन, कमअक्ल, कमउम्र, कमबख्त, | हैड | प्रमुख | हैडमास्टर, हैडबॉय, हैड गर्ल |
| बिल | "के साथ," "अनुसार," "द्वारा," या "सहित" | बिलआखिर, बिल्कुल, बिलवजह | | | |

महत्वपूर्ण बिन्दु

- 'अ' उपसर्ग का प्रयोग व्यंजन के साथ किया जाता है।
- एक से अधिक उपसर्ग से बना शब्द :
 - ✓ समालोचना - समालोचना = सम + आलोचना (लोच् धातु)
 - ✓ उपाध्यक्ष - उपाध्यक्ष – उप + अधि + अक्ष
 - ✓ दुर्व्यवहार - दुर् + वि + अव + हार (उपसर्ग- दुर् + वि + अव)

➤ शब्द जिनमे उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ है -

- ✓ अलौकिकता = अ+लौकिक + ता (अ = उपसर्ग ; ता = प्रत्यय)
- ✓ प्रशासनिक = प्र + शासन + इक (प्र = उपसर्ग ; इक = प्रत्यय)
- ✓ दुस्साहसिक = दुस् + साहस + इक। (दुस् = उपसर्ग ; इक = प्रत्यय)
- ✓ अनुशासनिक = अनु + शासन + इक। (अनु = उपसर्ग ; इक = प्रत्यय)
- ✓ सुवासिक = सु + वास + इक (सु = उपसर्ग ; इक = प्रत्यय)
- ✓ अभिमानी = अभि + मान + ई (अभि = उपसर्ग ; ई = प्रत्यय)
- ✓ अंतः करणीय = अंतः + करण + इय।(अंतः = उपसर्ग ; इय = प्रत्यय)
- ✓ अकथनीय = अ + कथन + इय।(अ = उपसर्ग ; इय = प्रत्यय)
- ✓ अत्याचारी = अति + चार + ई (अति = उपसर्ग ; ई = प्रत्यय)
- ✓ उजड़ना = उ + जड़ + ना (उ = उपसर्ग ; ना = प्रत्यय)

➤ दो उपसर्गों के मेल से बने शब्द :

- ✓ निर् + आ + करण = निराकरण
- ✓ सु + सम् + कृत = सुसंस्कृत
- ✓ अन् + आ + हार = अनाहार

परीक्षा मे पूछे गए उपसर्ग

| | | |
|---------|--|--|
| अन् | पीछे | अन् + आ + चरण = अनाचरण ; अनुपम अनाचार, अनपढ़, अनादि |
| अधः | नीचे | अधः+ लिखित= अधोलिखित |
| अपर | जो परलोक से उल्टा है जिससे दुःख विशेष भोगना होता है | अपर + लोक = अपरलोक |
| उत् | ऊपर / श्रेष्ठ | उज्ज्वल, उल्लेख, उद्घाटन, उच्चारण, उच्छास, उन्नत, उन्मेष, उत्पात, उत्कर्ष, उद्धार, |
| अल्प | हीन, कम | अल्पायु, अल्पज्ञ, अल्पव्यस्क, अल्पविराम, अल्पवयस, अल्पप्राण, अल्पसंख्यक |
| सत् | 'अच्छा', 'सत्य', 'श्रेष्ठ', 'सही', 'शुभ', या 'सहित' | सन्मार्ग, सज्जन, सदाचार, |
| अलम् | पर्याप्त | अलंकार |
| पुनः | फिर से | पुनर्जीवन, पुनर्जन्म |
| किं | क्या / कुछ | 'किंकिणी' |
| तत् | उस / उसका | तत्व, तत्काल, तत्सम, तत्पर, तदुपरांत, |
| प्रादुर | उत्पन्न | प्रादुर्भूत, प्रादुर्भाव |
| फ़िल | 'में', 'पर', 'के भीतर', 'के संबंध में' या 'के दौरान' | फिलहाल, |
| पर | "दूसरा", "भिन्न", "पार", या "विपरीत" | परोपकार, परजीवी, परदेश, परतंत्र, परकीय, परसाल |
| प्राक् | पहले, पूर्व या सामने | प्राक्तन, प्रागैतिहासिक |